KNOW THE SECRET OF UNIVERSE

Shiv Shakti Rahasya

WRITTEN BY

BHOOMIKA KALAM

शिव शक्ति रहस्य

लेखक
भूमिका कलम

शिव, मृत्युंजय, आशुतोष, गंगाधर, जटाधर, शशिशेखर, त्रिलोकेश, त्रिपुरांतक, महादेव, भोलेनाथ, भोला भंडारी और न जानें कितने नामों से हम 'देवों के देव महादेव' को जानते हैं, उनकी महिमा और लीलाएं अपरंपार है। जिनका वर्णन करना सूर्य को रोशनी दिखाने के समान होगा। शिव इतने सरल, सहज और सुलभ हैं कि उनकी पूजा उत्तर में कैलाश से लेकर दक्षिण में रामेश्वरम तक की जाती है। शिव असीमित शक्तियों के स्वामी हैं। वे आदि अनंत है यानि जिसका न कभी जन्म हुआ और ना ही जिसका कभी अन्त होगा, शायद इसलिए बाकी सब देव हैं और केवल शिव ही 'देवों के देव महादेव' हैं। वे उत्सव प्रिय है, जब वह मस्ती में खुशी में नृत्य करते हैं तो वह नटराज होते हैं। वे प्रलयकारी भी है जब गुस्से में होते हैं तो तांडव नृत्य करते हैं, उनके इस रौद्र रूप से तीनों लोक कांपने लगते हैं, धरती डोलने लगती है। शिव का नृत्य कैलाश पर भी होता है और श्मशान में भी होता है। श्मशान में उत्सव मनाने वाले भगवान शिव अकेले देवता हैं। लेकिन इन सबके बावजूद समाज के भद्रलोक से लेकर शोषित, वंचित तक के देवता शिव हैं। लेकिन इतने विशाल होने के बावजूद भी बिना शक्ति के शिव अधूरे हैं।

शक्ति वह ऊर्जा जो सृष्टि का सजृन करती है संचालन करती है और पोषण करती है। बिना शक्ति के शिव का अस्तित्व तो है लेकिन वह अधूरा है, शक्ति का महत्व इसी बात से पता चलता है कि भगवान शिव ने स्वयं शक्ति को अपने आधे अंग में स्थान दिया है।

इस सृष्टि को संचालित करने का दायित्व तीन देवताओं पर है, जिनमें हम ब्रह्मा जी को सृष्टि रचियता के रूप में जानते हैं, भगवान विष्णु को सृष्टि के संचालक के रूप में जाना जाता है वहीं भगवान शिव को संहार का देवता कहा जाता है। भगवान शिव सौम्य आकृति एवं रौद्ररूप दोनों के लिए विख्यात हैं। वे लय एवं प्रलय दोनों को अपने अधीन किए हुए हैं। अन्य देवों से शिव को भिन्न माना गया है। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार के अधिपति शिव हैं। शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदिस्रोत हैं। शिव का स्वरूप बड़ा ही निराला है वे अर्धनग्न, शरीर पर भभूत मले, जटाधारी, गले में रुद्राक्ष और सर्प लपेटे, कंठ में विष, जटाओं में जगत-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयकारी ज्वाला, मतवाले, नाचते-गाते, भांग-धतूरे का सेवन करते भगवान शंकर को भोला भंडारी भी कहते हैं। वास्तव में शिव आम आदमी के देवता हैं। वे समाज के उस तबके के भी देवता हैं जिन्हें समाज ने अलग-थलग कर रखा है। वो हर वक्त समाज की सामाजिक बंदिशों से आजाद होने, खुद की राह बनाने और जीवन के नए अर्थ खोजने की चाह में रहते हैं।

विषम परिस्थितियों में भी अद्भुत सामंजस्य बिठाने वाला उनसे बड़ा कोई दूसरा भगवान नहीं है। वो अर्धनारीश्वर होकर भी काम पर विजय पाते हैं तो गृहस्थ होकर भी परम विरक्त हैं। नीलकंठ होकर भी विष से अलिप्त हैं। उग्र होते हैं तो तांडव, नहीं तो सौम्यता से भरे भोला भंडारी। परम क्रोधी पर परम दयालु भी शिव ही हैं। विषधर नाग और शीतल चंद्रमा दोनों उनके आभूषण हैं। यही शिव का अद्भुत सामंजस्य हैं।

शिव गुट निरपेक्ष हैं। सुर और असुर, देव और दानव दोनों का उनमें विश्वास है। राम और रावण दोनों उनके उपासक हैं। दोनों गुटों पर उनकी समान कृपा है। आपस में युद्ध से पहले दोनों पक्ष उन्हीं को पूजते हैं। लोक कल्याण के लिए वो हलाहल पीते हैं और डमरू बजाएं तो प्रलय होता है। शिव पहले पर्यावरण प्रेमी हैं। शिव पशुपति हैं। शिव ने बैल 'नंदी' को अपना वाहन बनाया, सांप 'वासुकि' को आश्रय दिया। जिसकों किसी ने गले नहीं लगाया, महादेव ने उन्हें गले लगाया। शिव का व्यक्तित्व विशाल है। वो काल से परे है वो महाकाल हैं। सिर्फ भक्तों के नहीं देवताओं के भी संकटमोचक हैं। शिव का पक्ष सत्य का पक्ष है। एक लोटा भरे जल स प्रसन्न होने वाले देवता आपको कहां मिलेंगे।

'शिव शक्ति रहस्य' किताब के लेखन से हमारा उद्देश्य भगवान शिव के और करीब आने का है, भगवान शिव और शक्ति मां पार्वती के बीच आत्मीय संबंध और सामंजस्य को दुनिया के सामने लाने का है। कैसे दोनों ने मिलकर सृष्टि का सृजन किया, संचालन किया किस प्रकार उन्होंने संसार के उत्थान के लिए अपने स्वभाव में परिवर्तन कर तालमेल स्थापित किया।

यही नही जब आप भगवान शिव के विशाल स्वरूप के रहस्य और गूढ़ अर्थो को सरलता से समझेंगें, तो पाएंगे कि कलयुग में भी शिव की शक्ति-भक्ति कितनी प्रासंगिक है। जहाँ आज पूरा विक्रत पर्यावरण संरक्षण की चिंता कर रहा हैं । नदियों के अस्तित्व को लेकर फिक्रमंद हो रहा है, वहीं भगवान शिव ने जीवन से प्रकृति के लगाव को सृष्टि के अस्तित्व आते ही समझा दिया।
भगवान शिव की जीवन शैली और लीलाओं के रहस्यों को जब हम समझने की कोशिश करेंगे तो समझ सकेंगे कि वर्तमान में कहे जाने वाले मुहावरें "जैसे को तैसा" तर्ज पर भगवान शिव अपनी शैली से जीने को प्रेरित करते है। वर्तमान में जीवन जीने की कलको सरल-सहज बनाने के लिए भगवान शिव के रहस्य को जान लेना पर्याप्त है। हमारी भी यही विनम्र कोशिश है, तमाम तनावों- झझावतो के बीच भगवान शिव की अलौकिक चमक से हमारे जीवन में भी प्रकाश फैले।

भगवान शिव के जन्म का रहस्य

भगवान शिव के जन्म को लेकर वेद कहते हैं कि वे अजन्मे, प्रकट, निराकार, निर्गुण और निर्विकार हैं। अर्थात अजन्मा का अर्थ जिसने कभी जन्म नहीं लिया और जो आगे भी जन्म नहीं लेगा, प्रकट अर्थात जो किसी भी गर्भ से उत्पन्न न होकर स्वयंभू प्रकट हो गया है, निराकार अर्थात जिसका कोई आकार नहीं है, निर्गुण अर्थात जिसमें किसी भी प्रकार का कोई अवगुण नहीं है, निर्विकार अर्थात जिसमें किसी भी प्रकार का कोई विकार या दोष भी नहीं है।

शिवपुराण में कथा है कि ब्रह्मा विष्णु भी भगवान शिव के आदि और अंत का पता नहीं कर पाए थे। लेकिन इनके जन्म की भी एक रोचक कथा है, इस कथा का उल्लेख बहुत कम मिलता है इसलिए कम ही लोगों को इसकी जानकारी है। तो आइए जानें भगवान शिव के जन्म की अद्भुत कथा।

भगवान ब्रह्मा, विष्णु और भगवान महेश, इन तीनों देवताओं का जन्म अपने आपमें एक महान रहस्य है। कई पुराणों का कहना है कि ब्रह्मा और विष्णु शिव से पैदा हुए थे। लेकिन पुराण ही इस मत को खंडित कर देते हैं और सवाल लाकर खड़ा कर देते हैं कि शिव का जन्म फिर कैसे हुआ था।

शिव पुराण में शिव का जन्म-
शिव पुराण की बातों पर इस विषय में अधिक विश्वास किया जाता है। इस पुराण के अनुसार भगवान शिव स्वयंभू है अर्थात (सेल्फ बॉर्न) माना गया है। शास्त्रों में इसको लेकर कहा गया कि 'वह वहां थे, जब कुछ भी और कोई भी नहीं था और वह सब कुछ नष्ट हो जाने के बाद भी रहेंगे।' इसीलिए वह 'आदि देव' हैं। इन्हीं आदि देव से अखिल ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति बताई गई है। जो सभी देवों में प्रथम हैं।

लिंग रूप में पहली बार प्रकट हुए थे शिव-
पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु के जन्म के बाद दोनों में बहस हो गई कि कौन अधिक श्रेष्ठ हैं। अचानक, कहीं से एक चमकदार लिंग दिखाई दिया। उसके बाद एक आकाशवाणी हुई कि जो भी इस लिंग का आरंभ या अंत पता लगा लेगा, वह बड़ा होगा। भगवान विष्णु नीचे की ओर गए और ब्रह्मा जी ऊपर की ओर। दोनों कई वर्षों तक खोज करते रहे लेकिन उन्हें न तो उस लिंग का आरम्भ मिला और न ही अंत।

जब शिव ने बताया अपना असली स्वरूप-
भगवान विष्णु को अहसास हुआ यह ज्योतिर्लिंग एक परमशक्ति हैं जो इस ब्रह्मांड का मूलभूत कारण है और यही भगवान शिव हैं। इसके साथ ही आकाशवाणी हुई यह शिवलिंग है और मेरा कोई आकार नहीं है। मैं निरंकार हूं।

वर्तमान परिवेश में इससे सिख मिलती है कि मनुष्य जीवन में सभी परिस्थितियों में हमें निराकार भाव से जीना है।
यानी किसी से न अधिक प्रभावीत और न किसी के प्रति विद्वेश भाव रख अपनी भाव भंगिमाओं को परिवर्तित करना है।
अर्थात मन से पूरी तरह निराकार ...।

कर्म पुराण में रुद्र के जन्म की कथा-
भगवान शिव के जन्म के विषय में इस कथा के अलाव भी कई कथाएं हैं। दरअसल शिव के ग्यारह अवतार माने जाते हैं। इन अवतारों की कथाओं में रुद्रावतार की कथा काफी प्रचलित है। कूर्म पुराण के अनुसार जब सृष्टि को उत्पन्न करने में ब्रह्मा जी को कठिनाई होने लगी तो वह रोने लगे। ब्रह्मा जी के आंसुओं से भूत-प्रेतों का जन्म हुआ और मुख से रुद्र उत्पन्न हुए। रुद्र भगवान शिव के अंश और भूत-प्रेत उनके गण यानी सेवक माने जाते हैं।

विष्णु पुराण के अनुसार ब्रह्मा भगवान विष्णु की नाभि कमल से पैदा हुए जबकि शिव भगवान विष्णु के माथे के तेज से उत्पन्न हुए बताए गए हैं। विष्णु पुराण के अनुसार माथे के तेज से उत्पन्न होने के कारण ही शिव हमेशा योगमुद्रा में रहते हैं। श्रीमद् भागवत के अनुसार एक बार जब भगवान विष्णु और ब्रह्मा अहंकार से अभिभूत हो स्वयं को श्रेष्ठ बताते हुए लड़ रहे थे तब एक जलते हुए खंभे से भगवान शिव प्रकट हुए।

विष्णु पुराण में वर्णित शिव के जन्म की कहानी शायद भगवान शिव का एकमात्र बाल रूप वर्णन है। इसके अनुसार ब्रह्मा को एक बच्चे की जरूरत थी। उन्होंने इसके लिए तपस्या की। तब अचानक उनकी गोद में रोते हुए बालक शिव प्रकट हुए। ब्रह्मा ने बच्चे से रोने का कारण पूछा तो उसने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया कि उसका कोई नाम नहीं है इसलिए वह रो रहा है। तब ब्रह्मा ने शिव का नाम 'रूद्र' रखा जिसका अर्थ होता है 'रोने वाला'। शिव तब भी चुप नहीं हुए। इसलिए ब्रह्मा ने उन्हें दूसरा नाम दिया पर शिव को नाम पसंद नहीं आया और वे फिर भी चुप नहीं हुए। इस तरह शिव को चुप कराने के लिए ब्रह्मा ने 8 नाम दिए और शिव 8 नामों (रूद्र, शर्व, भाव, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव) से जाने गए। शिव पुराण के अनुसार यह नाम पृथ्वी पर लिखे गए थे।

आजकल प्रचलन में देखा गया है कि परिवार के लोग, खासकर अभिभावक अपने बच्चों के नाम प्रथक दिखाने के प्रतिस्पर्धा में अर्थहीन रखते है।
शिव के नाम और पर्याय इस बात को दर्शाते है कि भगवान ब्रह्मा ने भगवान के शीशु रूप में अर्थपूर्ण नाम रखे। मासूमों के नामकरण को लेकर हमारे धार्मीक प्रसंगो में बहुत महत्व इसलिए दिया गया है।

शिव के इस प्रकार ब्रह्मा पुत्र के रूप में जन्म लेने के पीछे भी विष्णु पुराण की एक पौराणिक कथा है। इसके अनुसार जब धरती, आकाश, पाताल समेत पूरा ब्रह्माण्ड जलमग्न था तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) के सिवा कोई भी देव या प्राणी नहीं था। तब केवल विष्णु ही जल सतह पर अपने शेषनाग पर लेटे नजर आ रहे थे। तब उनकी नाभि से कमल नाल पर ब्रह्मा जी प्रकट हुए। ब्रह्मा-विष्णु जब सृष्टि के संबंध में बातें कर रहे थे तो शिव जी प्रकट हुए। ब्रह्मा ने उन्हें पहचानने से इंकार कर दिया। तब शिव के रूठ जाने के भय से भगवान विष्णु ने दिव्य दृष्टि प्रदान कर ब्रह्मा को शिव की याद दिलाई।
ब्रह्मा को अपनी गलती का एहसास हुआ और शिव से क्षमा मांगते हुए उन्होंने उनसे अपने पुत्र रूप में पैदा होने का आशीर्वाद मांगा। शिव ने ब्रह्मा की प्रार्थना स्वीकार करते हुए उन्हें यह आशीर्वाद प्रदान किया। जब ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना शुरू की तो उन्हें एक बच्चे की जरूरत पड़ी और तब उन्हें भगवान शिव का आशीर्वाद ध्यान आया। अत: ब्रह्मा ने तपस्या की और बालक शिव बच्चे के रूप में उनकी गोद में प्रकट हुए।

शिव के व्यक्तित्व का चित्रण

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी द्वारा रचित श्री रामचरित मानस में बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है। कथा में तुलसी दास जी बताते हैं कि भगवान शिव का व्यक्तित्व इतना विराट है कि उसका पूरा चित्र प्रस्तुत कर पाना असंभव है। उनकी वेषभूषा भय और हास्य दोनों का ही सृजन करती है। भगवान भोलेनाथ का श्रृंगार भी सोचने को विवश करता है। कई प्रश्नों को जन्म देता है। शीर्ष पर घनी लंबी और उलझी हुई काली जटाएं है। जटाओं में गंगा का वास है, वहीं भल चंद्र सुशोभित है। कानों में कुंडल धारण किए हुए हैं। तन पर भस्म रमी हुई है। गले में नाग सुशोभित है। एक हाथ में डमरू और दूसरे हाथ में त्रिशूल है। भगवान शिव नंदी बैल की सवारी करते हैं। साध्वी तपस्विनी भारती भगवान शिव श्मशान भस्म का लेप करते हैं। इसके पीछे भी गूढ़ रहस्य है। यह संसार और मन तन की नश्वरता का प्रतीक है।

एक लोटा जल और एक-दो बेल पत्र से ही प्रसन्न हो जाते हैं भोलेनाथ, क्योंकि वे धन के नहीं, भाव के भूखे हैं। इसीलिए उन्हें आम लोगों का भगवान माना जाता है.. इसीलिए इन्हें आशुतोष यानी शीघ्र प्रसन्न होने वाला कहा जाता है। अठारह पुराणों में शिव श्रेष्ठ माने गए हैं। पुराणों के अनुसार भगवान शिव ही समस्त सृष्टि के आदि कारण हैं। उन्हीं से ब्रह्मा, विष्णु सहित समस्त सृष्टि का उद्भव होता हैं। सदाशिव बड़े ही सरल स्वभाव वाले,

सर्वव्यापी, करुणामयी और भक्तों पर शीघ्र प्रसन्न होने वाले हैं। इनकी पूजा-उपासना में बहुत आडंबर की आवश्यकता नहीं होती। वे सिर्फ एक लोटा जल और संभव हो तो एक-दो बेलपत्रसे ही प्रसन्न हो जाते हैं। मूल रूप से ये आदिवासी, गुहावासी,वनवासी, निर्धन और वंचित लोगों के आराध्य देव हैं।

शिव योगी भी हैं और गृहस्थ जीवन में लीन भी

भगवान शिव योगी के रुप में वास करते हैं। शिव अन्य देवों से भिन्न हैं। शिव अपने रौद्र रुप तथा सौम्य आकृति दोनों के लिए विख्यात हैं। यह सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार के अधिपति हैं। सृष्टि की लय और प्रलय दोनों ही भगवान शिव के अधीन हैं। इनकी लीला अदभुत है, इनमें सभी भावों का परस्पर तालमेल दिखाई देता है। इनके मस्तक पर एक ओर चन्द्रमा विराजमान है तो दूसरी ओर साँप उनके गले का हार बनकर झूल रहा है। यह योगी भी हैं और गृहस्थ जीवन में भी लीन हैं। स्वभाव में सौम्यता होते हुए भी भयंकर रौद्र रुप भी इनमें विद्यमान है. यह अर्धनारीश्वर होते हुए भी कामजित कहलाते हैं. इनके परिवार में भूत-प्रेत, साँप, छछूंदर, सिंह, नन्दी, मूषक, मोर आदि सभी शामिल है. सभी को यह सम दृष्टि से देखते हैं. इन्हें महाकाल भी कहा गया है. महाकाल की आराधना करने का महापर्व 'महाशिवरात्रि' कहलाता है.
भगवान शिव के योगी भाव और गृहस्थ भाव में कई युगों - युगान्तर बाद कलयुग में भी सीख दी हैं।
भगवान शिव उस अवधारणा को खारिज करते है, जिसमे एक पक्ष केवल योग-साधना के लिए अविवाहित होकर जीवन जीने को प्राथमिकता देते है। भगवान शिव का भाव जितना योगीत्व दर्शाता है, उससे कहीं अधिक गृहस्थ जीवन को प्रदर्शित करता है। भगवान शिव-पार्वती के कई आत्मीय प्रसंग, वर्तालाप धार्मिक ग्रंथों में है।

शिव साक्षात् कल्याण हैं

शिव शुद्ध ब्रह्म हैं। सूर्य की आभा शिव हैं। शिव और शक्ति के प्रभाव से ही सूर्य प्रकाश और ऊष्मा बिखेरने में सक्षम होता है। शिव पराशक्ति हैं। पूरे ब्रह्माण्ड को दो भागों में बांटा गया है-अपरा प्रकृति और परा प्रकृति। अपरा प्रकृति के आठ स्वरूप हैं-भूमि, आप (जल), अनल, वायु, नभ, मन, बुद्धि तथा अहंकार। परा प्रकृति प्राण को कहते हैं, जो आत्मा है और अमर है। इसमें प्रभा-प्रभाकर, शिवा-शिव, नारायणी-नारायणआते हैं,जो परा प्रकृति को जानते हैं। अपरा प्रकृति किसी को नहीं जानती। शिव निराकार हैं, शंकर साकार हैं। शिव जब साकार हो जाते हैं तो गंगाधर, चंद्रशेखर, त्रिलोचन, नीलकंठ एवं दिगंबर कहलाते हैं। ओम का अर्थ है कल्याण रूपी ओंकार परमात्मा। जो शिव निर्गुण निराकार रूप में रोम-रोम में ओम बिराजते, उसी शिव का ध्यान भक्तगण शंकर के रूप में करते हैं। शिव जब सगुण साकार हो कर शंकर बनते हैं तो स्वयं ओम का जाप करते हैं स्वयं की शक्ति में ओज के निमित्त। जैसे सूर्य अपनी आभा में सारी सृष्टि को देखता है, उसी तरह शिव अपनी शिवा में पूरी सृष्टि को देखते हैं। विद्वान संत शिवानन्द स्वामी ने कहा है-

ब्रह्मा विष्णु सदाशिवजानतअविवेका।
प्रणवाक्षरमध्य तीनों ही एका॥
गोस्वामी तुलसीदास ने भी शिव और शक्ति को इस रूप में देखा है-

भवानी शंकरौवंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।
याभ्यांविनान पश्यंतिसिद्धास्वांतस्थमीश्वर:॥
अर्थात् मैं श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप भवानी और शंकर की वंदना करता हूं, जिनकी कृपादृष्टि के बिना कोई भी सिद्ध योगी अपने अंतकरणमें अवस्थितईश्वर को देख नहीं सकता।

शिव की आराधना से आत्मबल में वृद्धि होती है

शिवाराधन में शुद्धता को महत्व दिया जाता है, जिसका आधार फलाहार है। फलाहार से व्यवहार शुद्ध होता है। हर जीव शिव का ही अंश है और जब वह इसकी आराधना करता है तो अंत:सुखकी प्राप्ति होती है। शिव पूजा के लिए बेलपत्र,धूप, पुष्प, जल की महत्ता तो है ही, मगर शिव-श्रद्धा से अति प्रसन्न होते हैं, क्योंकि श्रद्धा जगज्जननीपार्वती हैं और सदाशिवभगवान शंकर स्वयं विश्वास हैं। श्रावण में शिवलिंगकी पूजा का काफी महत्व है, क्योंकि शिवलिंगभी अपने आप में भगवान शिव का ही एक विग्रह है। इसे सर्वतोमुखी भी कहा गया है, क्योंकि इसके चारों ओर मुख होते हैं। हमारे सतानतधर्म में जो 33करोड देवता हैं, उनकी पूजा शिवलिंगमें बिना आह्वान के ही मान्य हो जाती है। शिव की पूजा वस्तुत:आत्मकल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए, न कि सांसारिक वैभव के लिए।

पंचाक्षरीमंत्र है- ऊँ नम: शिवाय, ॐ देवाधिदेव महादेव को ही ओंकार कहतें हैं .ओंकार ही शाश्वत सत्य है .

'ऊँ नम: शिवाय' का जाप 108 बार करना चाहिए.

महामृत्युंजय मंत्र का जाप शिव भगवान को प्रसन्न करने का तथा सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करने का महामंत्र है. इस महामंत्र का 108 बार जाप करने से प्राणी के सभी दु:खों का नाश होता है. मंत्र है :-

'ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम, उवार्रुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात'

भगवान शिव की रोचक बातें और उनका अर्थ

भगवान शिव की तीन आंखें

धर्म ग्रंथों के अनुसार सभी देवताओं की दो आंखें हैं, लेकिन एकमात्र शिव ही ऐसे देवता हैं जिनकी तीन आंखें हैं। तीन आंखों वाला होने के कारण इन्हें त्रिनेत्रधारी भी कहते हैं। लाइफ मैनेजमेंट की दृष्टि से देखा जाए तो शिव का तीसरा नेत्र प्रतीकात्मक है। आंखों का काम होता है रास्ता दिखाना और रास्ते में आने वाली मुसीबतों से सावधान करना। जीवन में कई बार ऐसे संकट भी आ जाते हैं, जिन्हें हम समझ नहीं पाते। ऐसे समय में विवेक और धैर्य ही एक सच्चे मार्गदर्शक के रूप में हमें सही-गलत की पहचान कराता है। यह विवेक अत:प्रेरणा के रूप में हमारे अंदर ही रहता है। बस जरुरत है उसे जगाने की। भगवान शिव का तीसरा नेत्र आज्ञा चक्र का स्थान है। यह आज्ञा चक्र ही विवेक बुद्धि का स्रोत है। यही हमें विपरीत परिस्थिति में सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है।
इसका अहसास हर व्यक्ति को होता है, परंतु उसे नजर अंदाज कर जाता है। प्रक्रति हर मनुष्य को अच्छी बुरी घटनाओं के घटित होने का संकेत जरूर देती है।
यही तीसरा नेत्र है।

शिव भस्म क्यों लगाते हैं

हमारे धर्म शास्त्रों में जहां सभी देवी-देवताओं को वस्त्र-आभूषणों से सुसज्जित बताया गया है वहीं भगवान शंकर को सिर्फ मृग चर्म (हिरण की खाल) लपेटे और भस्म लगाए बताया गया है। भस्म शिव का प्रमुख वस्त्र भी है क्योंकि शिव का पूरा शरीर ही भस्म से ढंका रहता है। शिव का भस्म रमाने के पीछे कुछ वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक कारण भी हैं। भस्म की एक विशेषता होती है कि यह शरीर के रोम छिद्रों को बंद कर देती है। इसका मुख्य गुण है कि इसको शरीर पर लगाने से गर्मी में गर्मी और सर्दी में सर्दी नहीं लगती। भस्मी त्वचा संबंधी रोगों में

भी दवा का काम करती है। भस्मी धारण करने वाले शिव यह संदेश भी देते हैं कि परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढालना मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है।

शिव के हाथ में त्रिशूल

त्रिशूल भगवान शिव का प्रमुख अस्त्र है। यदि त्रिशूल का प्रतीक चित्र देखें तो उसमें तीन नुकीले सिरे दिखते हैं। यूं तो यह अस्त्र संहार का प्रतीक है पर वास्तव में यह बहुत ही गूढ़ बात बताता है। संसार में तीन तरह की प्रवृत्तियां होती हैं- सत, रज और तम। सत मतलब सात्विक, रज मतलब सांसारिक और तम मतलब तामसी अर्थात निशाचरी प्रवृति। हर मनुष्य में ये तीनों प्रवृत्तियां पाई जाती हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि इनकी मात्रा में अंतर होता है। त्रिशूल के तीन नुकीले सिरे इन तीनों प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। त्रिशूल के माध्यम से भगवान शिव यह संदेश देते हैं कि इन गुणों पर हमारा पूर्ण नियंत्रण हो। यह त्रिशूल तभी उठाया जाए जब कोई मुश्किल आए। तभी इन तीन गुणों का आवश्यकतानुसार उपयोग हो।

शिव ने क्यों पीया था जहर

देवताओं और दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन से निकला विष भगवान शंकर ने अपने कंठ में धारण किया था। विष के प्रभाव से उनका कंठ नीला पड़ गया और वे नीलकंठ के नाम से प्रसिद्ध हुए। समुद्र मंथन का अर्थ है अपने मन को मथना, विचारों का मंथन करना। मन में असंख्य विचार और भावनाएं होती हैं उन्हें मथ कर निकालना और अच्छे विचारों को अपनाना। हम जब अपने मन को मथेंगे तो सबसे पहले बुरे विचार ही निकलेंगे। यही विष हैं, विष बुराइयों का प्रतीक है। शिव ने उसे अपने कंठ में धारण किया। उसे अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। शिव का विष पीना हमें यह संदेश देता है कि हमें बुराइयों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए। बुराइयों का हर कदम पर सामना करना चाहिए। शिव द्वारा विष पीना यह भी सीख देता है कि यदि कोई बुराई पैदा हो रही हो तो हम उसे दूसरों तक नहीं पहुंचने दें।

भगवान का वाहन बैल

भगवान शंकर का वाहन नंदी यानी बैल है। बैल बहुत ही मेहनती जीव होता है। वह शक्तिशाली होने के बावजूद शांत एवं भोला होता है। वैसे ही भगवान शिव भी परमयोगी एवं शक्तिशाली होते हुए भी परम शांत एवं इतने भोले हैं कि उनका एक नाम ही भोलेनाथ जगत में प्रसिद्ध है। भगवान शंकर ने जिस तरह काम को भस्म कर उस पर विजय प्राप्त की थी, उसी तरह उनका वाहन भी कामी नही होता। उसका काम पर पूरा नियंत्रण होता है। साथ ही नंदी पुरुषार्थ का भी प्रतीक माना गया है। कड़ी मेहनत करने के बाद भी बैल कभी थकता नहीं है। वह लगातार अपने कर्म करते रहता है। इसका अर्थ है हमें भी सदैव अपना कर्म करते रहना चाहिए। कर्म करते रहने के कारण जिस तरह नंदी शिव को प्रिय है, उसी प्रकार हम भी भगवान शंकर की कृपा पा सकते हैं।

शिव के मस्तक पर चंद्रमा

भगवान शिव का एक नाम भालचंद्र भी प्रसिद्ध है। भालचंद्र का अर्थ है मस्तक पर चंद्रमा धारण करने वाला। चंद्रमा का स्वभाव शीतल होता है। चंद्रमा की किरणें भी शीतलता प्रदान करती हैं। लाइफ मैनेजमेंट के दृष्टिकोण से देखा जाए तो भगवान शिव कहते हैं कि जीवन में कितनी भी बड़ी समस्या क्यों न आ जाए, दिमाग हमेशा शांत ही रखना चाहिए। यदि दिमाग शांत रहेगा तो बड़ी से बड़ी समस्या का हल भी निकल आएगा। ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा को मन का कारक ग्रह माना गया है। मन की प्रवृत्ति बहुत चंचल होती है। भगवान शिव का चंद्रमा को धारण

करने का अर्थ है कि मन को सदैव अपने काबू में रखना चाहिए। मन भटकेगा तो लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाएगी। जिसने मन पर नियंत्रण कर लिया, वह अपने जीवन में कठिन से कठिन लक्ष्य भी आसानी से पा लेता है।

वर्तमान परिवेश में देखा गया है सिर्फ मन के नियंत्रण के नहीं होने पर आवेश-उत्तेजनाओ का शिकार मनुष्य हो रहा है। तनाव के साथ आपसी वैमनष्यता और आपराधिक प्रवृति बढ़ने का कारण भी यही माना जा सकता है। भगवान शिव की मन पर नियंत्रण रखने की यह सीख सबसे अलग है।

शिव श्मशान निवासी

भगवान शिव को वैसे तो परिवार का देवता कहा जाता है, लेकिन फिर भी श्मशान में निवास करते हैं। भगवान शिव के सांसारिक होते हुए भी श्मशान में निवास करने के पीछे लाइफ मैनेजमेंट का एक गूढ़ सूत्र छिपा है। संसार मोह-माया का प्रतीक है जबकि श्मशान वैराग्य का। भगवान शिव कहते हैं कि संसार में रहते हुए अपने कर्तव्य पूरे करो, लेकिन मोह-माया से दूर रहो। क्योंकि ये संसार तो नश्वर है। एक न एक दिन ये सबकुछ नष्ट होने वाला है। इसलिए संसार में रहते हुए भी किसी से मोह मत रखो और अपने कर्तव्य पूरे करते हुए वैरागी की तरह आचरण करो।

शिव गले में नाग

भगवान शिव जितने रहस्यमयी हैं, उनका वस्त्र व आभूषण भी उतने ही विचित्र हैं। सांसारिक लोग जिनसे दूर भागते हैं। भगवान शिव उसे ही अपने साथ रखते हैं। भगवान शिव एकमात्र ऐसे देवता हैं जो गले में नाग धारण करते हैं। देखा जाए तो नाग बहुत ही खतरनाक प्राणी है, लेकिन वह बिना कारण किसी को नहीं काटता। नाग पारिस्थितिक तंत्र का महत्वपूर्ण जीव है। जाने-अंजाने में ये मनुष्यों की सहायता ही करता है। कुछ लोग डर कर या अपने निजी स्वार्थ के लिए नागों को मार देते हैं। लाइफ मैनेजमेंट के दृष्टिकोण से देखा जाए तो भगवान शिव नाग को गले में धारण कर ये संदेश देते हैं कि जीवन चक्र में हर प्राणी का अपना विशेष योगदान है। इसलिए बिना वजह किसी प्राणी की हत्या न करें।

शिव को चढाते हैं भांग-धतूरा

भगवान शिव को भांग-धतूरा मुख्य रूप से चढ़ाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि भगवान को भांग-धतूरा चढ़ाने से वे प्रसन्न होते हैं। भांग व धतूरा नशीले पदार्थ हैं। आमजन इनका सेवन नशे के लिए करते हैं। लाइफ मैनेजमेंट के अनुसार भगवान शिव को भांग-धतूरा चढ़ाने का अर्थ है अपनी बुराइयों को भगवान को समर्पित करना। यानी अगर आप किसी प्रकार का नशा करते हैं तो इसे भगवान को अर्पित करे दें और भविष्य में कभी भी नशीले पदार्थों का सेवन न करने का संकल्प लें। ऐसा करने से भगवान की कृपा आप पर बनी रहेगी और जीवन सुखमय होगा।

कुछ युवाओं ने इस पवित्र अवधारणा को अपने अनुरूप बना लिया। भगवान शिव का प्रसंग बताकर नशा करते है। यहां तक कि धार्मिक शोभा यात्राओ में कई लोग नशे धुत्त हो जाते है। यह अवधारणा भगवान शिव की हो ही नही सकती।

शिव को बिल्व पत्र

शिवपुराण आदि ग्रंथों में भगवान शिव को बिल्व पत्र चढ़ाने का विशेष महत्व बताया गया है। 3 पत्तों वाला बिल्व पत्र ही शिव पूजन में उपयुक्त माना गया है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बिल्वपत्र के तीनों पत्ते कहीं से कटे-फटे न हो। लाइफ मैनेजमेंट के दृष्टिकोण से देखा जाए तो बिल्व पत्र के ये तीन पत्ते चार पुरुषार्थों में से तीन का प्रतीक

हैं- धर्म, अर्थ व काम। जब आप ये तीनों निस्वार्थ भाव से भगवान शिव को समर्पित कर देते हैं तो चौथा पुरुषार्थ यानी मोक्ष अपने आप ही प्राप्त हो जाता है।

कैलाश पर्वत भगवान शिव को प्रिय

शिवपुराण के अनुसार भगवान शिव कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं। पर्वतों पर आम लोग नहीं आते-जाते। सिद्ध पुरुष ही वहां तक पहुंच पाते हैं। भगवान शिव भी कैलाश पर्वत पर योग में लीन रहते हैं। लाइफ मैनेजमेंट की दृष्टि से देखा जाए तो पर्वत प्रतीक है एकांत व ऊंचाई का। यदि आप किसी प्रकार की सिद्धि पाना चाहते हैं तो इसके लिए आपको एकांत स्थान पर ही साधना करनी चाहिए। ऐसे स्थान पर साधना करने से आपका मन भटकेगा नहीं और साधना की उच्च अवस्था तक पहुंच जाएगा।

भूत-प्रेत शिव के गण

शिव को संहार का देवता कहा गया है। अर्थात जब मनुष्य अपनी सभी मयार्दाओं को तोड?े लगता है तब शिव उसका संहार कर देते हैं। जिन्हें अपने पाप कर्मों का फल भोगना बचा रहता है वे ही प्रेतयोनि को प्राप्त होते हैं। चूंकि शिव संहार के देवता हैं। इसलिए इनको दंड भी वे ही देते हैं। इसलिए शिव को भूत-प्रेतों का देवता भी कहा जाता है। दरअसल यह जो भूत-प्रेत है वह कुछ और नहीं बल्कि सूक्ष्म शरीर का प्रतीक है। भगवान शिव का यह संदेश है कि हर तरह के जीव जिससे सब घृणा करते हैं या भय करते हैं वे भी शिव के समीप पहुंच सकते हैं, केवल शर्त है कि वे अपना सर्वस्व शिव को समर्पित कर दें।

शिव के हर चेहरे के पीछे छिपा है एक अलौकिक रहस्य

विनाशक, रुद्र, नटराज, महेश ही नहीं वरन् भगवान शिव को हम इससे भी अधिक नामों से जानते हैं। सृष्टि में अच्छाई की स्थापना करने के उद्देश्य से बुराई का सर्वनाश करने वाले शिव के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने भी विभिन्न काल में विभिन्न अवतार लिए थे। लेकिन यह सिर्फ एक भ्रांति है क्योंकि वास्तविकता में केवल विष्णु ही अवतार लेकर धरती पर आए थे। शिव के जिन अवतारों का जिक्र किया जाता है दरअसल वह उनके स्वरूप मात्र हैं।

अवतार झ्र आज हम आपको शिव के उन्हीं कुछ मौलिक स्वरूपों, जिन्हें आम भाषा में शिव के अवतार माना जाता है, के विषय में बताएंगे।

शैव आगम
वेद व्यास द्वारा रचित महाशिव पुराण के शत रुद्र संहिता का उल्लेख करते हुए सुत मुनि ने शिव के मुख्य पांच स्वरूपों का वर्णन किया था। शैव आगम के अनुसार शिव सृष्टि को सुचारु रखने के लिए पांच तरह से कार्य करते हैं जिनमें रचना, संरक्षण, विलयन, दया करना और पापों की सजा देना शामिल हैं।

सद्योजात
शिव के इस स्वरूप का संबंध इच्छा शक्ति से है। अपने इस स्वरूप में शिव, दुखी और प्रसन्न, दोनों ही मुद्राओं में दिखाई देते हैं। शिव के इस स्वरूप में उनके भीतर के क्रोध और ज्वाला को बाहर निकालने की काबीलियत है। पांच मुखों वाले शिवलिंग में अपने इस स्वरूप में शिव पश्चिम दिशा की ओर देखते हैं।

सफेद रंग का स्वरूप

सफेद रंग में शिव अपने भीतरी अहम और क्रोध की पुष्टि करते हैं। कहते हैं जब ब्रह्मा सृष्टि की रचना करने जा रहे थे तब शिव ने उन्हें अपना आशीर्वाद इसी रूप में प्रदान किया था। शिव के इस स्वरूप का संबंध मणिपुर चक्र से है।

वामदेव
शिव का अगला स्वरूप है वामदेव, जिसका संबंध संरक्षण से है। अपने इस स्वरूप में शिव, कवि भी हैं, पालनकर्ता भी हैं और दयालु भी हैं। शिवलिंग के दाहिनी ओर पर मौजूद शिव का यह स्वरूप उत्तरी दिशा की ओर देखता है।

पीड़ाओं को दूर करने वाला
अपने इस स्वरूप में शिव का रंग लाल है। उनका यह स्वरूप, माया, शक्ति और सुंदरता के साथ जुड़ा है। बहुत से पौराणिक दस्तावेजों में यह बात उल्लिखित है कि वामदेव के भीतर दुखों और पीड़ाओं को दूर करने की भी ताकत है। शिव के संरक्षक रूप से संबंधित वामदेव, वायु तत्त्व और अनाहत चक्र से जुड़े हैं।

अघोर
दक्षिण की ओर मुख करके शिव अपने तीसरे स्वरूप में ज्ञान शक्ति और बुद्धि को प्रदर्शित करते हैं। शिव का यह स्वरूप प्राणमाया कोश से जुड़ा है। धूम्र वर्ण में शिव रुद्र की ताकत को दशार्ते हैं। जल तत्व से संबंधित शिव अपने इस स्वरूप के द्वारा मनुष्य के भीतर छिपे अहंकार में संतुलन और स्वाधिष्ठान चक्र के प्रतिनिधि हैं।

तत्पुरुष
पूर्वी दिशा की ओर मुख कर के शिव परमात्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिव का यह स्वरूप आनंद शक्ति या हर्ष को दशार्ने के साथ-साथ आत्मा की संरचना का प्रदर्शन करता है। पीले रंग के शिव स्वरूप का संबंध पृथ्वी तत्त्व से है।

एकाग्रता
शिव का संबंध मूलाधार चक्र से है इसलिए अगर आपको किसी चीज पर अपने मस्तिष्क को स्थिर करने में परेशानी होती है, आपकी एकाग्रता कम होती जा रही है तो आपको शिव के इस स्वरूप को अपने सामने रखकर उस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

ईशान
अपने इस स्वरूप में शिव ऊपर की ओर देख रहे हैं। ब्रह्माण्ड की चेतना को जाग्रत करते शिव अपने इस स्वरूप में आकाश की ओर देखते प्रतीत होते हैं। शिव के इस स्वरूप का अर्थ सदा शिव है, जो ब्रह्माण्ड के हर छोटे से छोटे कण, हर ओर और हर कृति में समाहित है।

विशुद्ध चक्र
आनंदमय कोश से संबंधित शिव विशुद्ध चक्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अवतार और स्वरूप में अंतर
शिव के ये सभी कार्य उनके अलग-अलग स्वरूपों से ताल्लुक रखते हैं। हालांकि इन सभी स्वरूपों से शिव का नाम, उनका कार्य और उनकी कृपा पूरी तरह एक-दूसरे से अलग है लेकिन अंत में वे शिव का ही अंग और उन्हीं का ही हिस्सा हैं।

ज्योतिषीय महत्व
सामान्य जन इन्हें शिव के अवतार और अलग व्यक्तित्व समझने की गलती कर बैठते हैं लेकिन यह मात्र उनके भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं, जिनका ज्योतिष की दुनिया में भी अपना एक अलग महत्व है।

क्यों होती है शिवलिंग की पूजा?
पूरे भारत में बारह ज्योर्तिलिंग हैं जिसके विषय में मान्यता है कि इनकी उत्पत्ति स्वयं हुई। इनके अलावा देश के विभिन्न भागों में लोगों ने मंदिर बनाकर शिवलिंग को स्थापित किया है और उनकी पूजा करते हैं। शिव आकार (मूर्ति रुप में) और निराकार (लिंग रुप में) दोनों रूपों में पूजे जाते हैं। 'शिव' का अर्थ है- 'परम कल्याणकारीङ'और 'लिंग' का अर्थ है - 'सृजन'. शिव के वास्तविक स्वरूप से अवगत होकर जाग्रत शिवलिंग का अर्थ होता है प्रमाण। वेदों में मिलता है उल्लेख- वेदों और वेदान्त में लिंग शब्द सूक्ष्म शरीर के लिए आता है. यह सूक्ष्म शरीर 17 तत्वों से बना होता है. मन, बुद्धि, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां और पांच वायु. वायु पुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुन: सृष्टिकाल में जिससे प्रकट होती है उसे लिंग कहते हैं. इस प्रकार विश्व की संपूर्ण ऊर्जा ही लिंग की प्रतीक है।
भारतीय सभ्यता के प्राचीन अभिलेखों एवं स्रोतों से भी ज्ञात होता है कि आदि काल से ही मनुष्य शिव के लिंग की पूजा करते आ रहे हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि सभी देवों में महादेव के लिंग की ही पूजा क्यों होती है। इस संदर्भ में अलग-अलग मान्यताएं और कथाएं हैं।
पहली कथा के अनुसार एक बार भृगुऋषि त्रिदेवों की परीक्षा लेने के लिये निकले, और वो जब शिव के पास पहुँचे तो उस समय भोलेनाथ देवी पार्वती के साथ शयनकक्ष मे थे! भृगु ने उनसे मिलना चाहा, पर द्वारपालों ने रोक दिया। भृगु ने कुछ देर तक प्रतीक्षा की, और फिर क्रुद्ध होकर अन्दर शयनकक्ष मे चले गये! उन्होने शयनकक्ष मे देखा कि शिव पार्वती के साथ विहार कर रहे थे!

क्रोधित होकर भृगु ने शिव को श्राप दिया कि मै तुम्हारे द्वार पर कब से प्रतीक्षारत हूँ, और तुम यहाँ मौजमस्ती कर रहे हो, इसीलिये मै तुम्हे श्राप देता हूँ कि आज के बाद तुम्हारी पूजा लिंगरूप में और पार्वती की पूजा योनिरूप मे होगी।

दूसरी कथा के अनुसार एक बार शिव को अपना होश नहीं रहा और वह निर्वस्त्र होकर भटकने लगे इससे ऋषियों ने उन्हें शाप दिया कि उनका लिंग कटकर गिर जाए। इसके बाद शिव का लिंग कटकर पाताल में चला गया और उसमे से अग्नि प्रज्वलित होने लगी! अब वह लिंग जहाँ भी जाता, वहाँ सब कुछ जलकर भस्म हो जाता था। ऐसी स्थिति देखकर देवतागण घबरा गये और इसके निवारण का उपाय पुछने ब्रह्माजी के पास आये! ब्रह्मा ने कहा कि शिवलिंग अमोघ है और इसे केवल माता पार्वती ही शान्त कर सकती हैङ्घ

अब सारे देवताओं ने पार्वती की शरण ली, और उनसे प्रार्थना किया कि माते शिवलिंग को शान्त करके संसार की रक्षा करो!

तब पार्वती वहां पहुंची, जहाँ वह लिंग दहक रहा था, उन्होने इसके बाद पार्वती ने शिवलिंग को धारण कर लिया और संसार को प्रलय से बचा लिया। शिवलिंग के नीचे पार्वती का भाग विराजमान रहने लगा। तभी से योनि और लिंग पूजा शुरू हुई! यह नियम बनाया गया कि शिवलिंग की आधी परिक्रमा होगी। इस प्रकार की कथा कई पुराणों में है।

तीसरी अवधारणा अलग है- शिव पुराण में शिवलिंग की पूजा के विषय में जो तथ्य मिलता है वह तथ्य इस कथा से अलग है। शिव पुराण में शिव को संसार की उत्पत्ति का कारण और परब्रह्म कहा गया है। इस पुराण के अनुसार भगवान शिव ही पूर्ण पुरूष और निराकार ब्रह्म हैं। इसी के प्रतीकात्मक रूप में शिव के लिंग की पूजा की जाती है।

भगवान शिव ने ब्रह्मा और विष्णु के बीच श्रेष्ठता को लेकर हुए विवाद को सुलझाने के लिए एक दिव्य लिंग प्रकट किया था। इस लिंग का आदि और अंत ढूंढते हुए ब्रह्मा और विष्णु को शिव के परब्रह्म स्वरूप का ज्ञान हुआ। इसी समय से शिव के परब्रह्म मानते हुए उनके प्रतीक रूप में लिंग की पूजा आरंभ हुई।

हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो की खुदाई से पत्थर के बने लिंग और योनी मिले हैं। एक मूर्ति ऐसी मिली है जिसके गर्भ से पौधा निकलते हुए दिखाया गया। यह प्रमाण है कि आरंभिक सभ्यता के लोग प्रकृति के पूजक थे। वह मानते थे कि संसार की उत्पत्ति लिंग और योनी से हुई है। इसी से लिंग पूजा की परंपरा चल पड़ी।

सभ्यता के आरंभ में लोगों का जीवन पशुओं और प्रकृति पर निर्भर था इसलिए वह पशुओं के संरक्षक देवता के रूप में पशुपति की पूजा करते थे। सैंधव सभ्यता से प्राप्त एक सील पर तीन मुंह वाले एक पुरूष को दिखाया गया है जिसके आस-पास कई पशु हैं।

इसे भगवान शिव का पशुपति रूप माना जाता है। प्रथम देवता होने के कारण ही इन्हें ही सृष्टिकर्ता मान लिया गया और लिंग रूप में इनकी पूजा शुरू हो गयी।

शिवलिंग के अद्भुत रहस्य और प्रकार

शिवलिंग का प्रकार : शिवलिंग ब्रह्मांड और ब्रह्मांड की समग्रता का प्रतिनिधित्व करता है। ब्रह्मांड अंडाकार ही है, जो एक अंडाकार शिवलिंग की तरह नजर आता है। शिवलिंग 'ब्रह्मांड' या ब्रह्मांडीय अंडे के आकार का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रमुख रूप से शिवलिंग **2** प्रकार के होते हैं**-** पहला आकाशीय या उल्का शिवलिंग

और दूसरा पारद शिवलिंग

पहला उल्कापिंड की तरह काला अंडाकार लिए हुए। इस तरह का एक शिवलिंग मक्का के काबा में स्थापित है, जो आसमान से गिरा था। ऐसे शिवलिंग को ही भारत में ज्योतिर्लिंग कहते हैं। 'पारद शिवलिंग' दूसरा मानव द्वारा निर्मित पारे से बना शिवलिंग होता है। इसे 'पारद शिवलिंग' कहा जाता है। पारद विज्ञान प्राचीन वैदिक विज्ञान है। इसके अलावा पुराणों के अनुसार शिवलिंग के प्रमुख 6 प्रकार होते हैं।

1. देव लिंग : जिस शिवलिंग को देवताओं या अन्य प्राणियों द्वारा स्थापित किया गया हो, उसे देवलिंग कहते हैं। वर्तमान समय में धरती पर मूल पारंपरिक रूप से यह देवताओं के लिए पूजित है।

2. असुर लिंग : असुरों द्वारा जिसकी पूजा की जाए, वह असुर लिंग। रावण ने एक शिवलिंग स्थापित किया था, जो असुर लिंग था। देवताओं से द्वेष रखने वाले रावण की तरह शिव के असुर या दैत्य परम भक्त रहे हैं।

3. अर्श लिंग : प्राचीनकाल में अगस्त्य मुनि जैसे संतों द्वारा स्थापित इस तरह के लिंग की पूजा की जाती थी।

4. पुराण लिंग : पौराणिक काल के व्यक्तियों द्वारा स्थापित शिवलिंग को पुराण शिवलिंग कहा गया है। इस लिंग की पूजा पुराणिकों द्वारा की जाती है।

5. मनुष्य लिंग : प्राचीनकाल या मध्यकाल में ऐतिहासिक महापुरुषों, अमीरों, राजा-महाराजाओं द्वारा स्थापित किए गए लिंग को मनुष्य शिवलिंग कहा गया है।

6. स्वयंभू लिंग : भगवान शिव किसी कारणवश स्वयं शिवलिंग के रूप में प्रकट होते हैं। इस तरह के शिवलिंग को स्वयंभू शिवलिंग कहते हैं। भारत में स्वयंभू शिवलिंग कई जगहों पर हैं। वरदानस्वरूप जहां शिव स्वयं प्रकट हुए थे।

शिवलिंग पूजा के नियम :

* शिवलिंग को पंचामृत से स्नानादि कराकर उन पर भस्म से 3 आड़ी लकीरों वाला तिलक लगाएं।
* शिवलिंग पर हल्दी नहीं चढ़ाना चाहिए, लेकिन जलाधारी पर हल्दी चढ़ाई जा सकती है।
* शिवलिंग पर दूध, जल, काले तिल चढ़ाने के बाद बेलपत्र चढ़ाएं।
* केवड़ा तथा चम्पा के फूल न चढ़ाएं। गुलाब और गेंदा किसी पुजारी से पूछकर ही चढ़ाएं।
* कनेर, धतूरे, आक, चमेली, जूही के फूल चढ़ा सकते हैं।
* शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं किया जाता, सामने रखा गया प्रसाद अवश्य ले सकते हैं।
* शिवलिंग नहीं, शिव मंदिर की आधी परिक्रमा ही की जाती है।
* शिवलिंग के पूजन से पहले पार्वतीजी का पूजन करना जरूरी है।

शिव जी को बिल्वपत्र चढ़ाने से मिलते हैं शुभ फल

एक करोड़ कन्यादान के फल के बराबर है बिल्वपत्र चढ़ाना

शिव शुद्ध कल्याण का पर्याय हैं। शिव उपासना शैव संप्रदाय में विशेष रूप से होती है, लेकिन भगवान शंकर की शीघ्र प्रसन्न होने की प्रवृत्ति के कारण इनकी पूजा सभी आस्तिकजन अपनी लौकिक व पारलौकिक कामना की पूर्ति के लिए हमेशा करते हैं।

प्रभु आशुतोष के पूजन में अभिषेक व बिल्वपत्र का प्रथम स्थान है। ऋषियों ने तो यह कहा है कि बिल्वपत्र भोले-भंडारी को चढ़ाना एवं 1 करोड़ कन्याओं के कन्यादान का फल एक समान है।

बेल का वृक्ष हमारे यहां संपूर्ण सिद्धियों का आश्रय स्थल है। इस वृक्ष के नीचे स्तोत्र पाठ या जप करने से उसके फल में अनंत गुना की वृद्धि के साथ ही शीघ्र सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसके फल की समिधा से लक्ष्मी का आगमन होता है। बिल्वपत्र के सेवन से कर्ण सहित अनेक रोगों का शमन होता है। बिल्व पत्र सभी देवी-देवताओं को अर्पित करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है। हयन यजैद् बिल्व पत्रैश्च भास्करं दिवाकरं वृन्तहीने बिल्पपत्रे समर्पयेतहण के अनुसार भगवान सूर्यनारायण को भी पूरी डंडी तोड़कर बिल्वपत्र अर्पित कर सकते हैं।

यदि साधक स्वयं बिल्वपत्र तोड़ें तो उसे ऋषि आचारेन्दु के द्वारा बताए इस मंत्र का जप करना चाहिए-

हयअमृतोद्भव श्री वृक्ष महादेवत्रिय सदा।

गृहणामि तव पत्राणि शिवपूजार्थमादरात्।।

भगवान शिव के 'नटराज' स्वरूप से जुड़ा रहस्य

भगवान शिव की अध्यात्म जगत में मान्यता जितनी दृढ़तर होती गयी उतने ही अधिक उनसे जुड़े कथानक प्रचलित होते गए। इसी में से एक है उनका नटराज स्वरूप और उससे जुड़ी प्रतीकात्मकता। नटराज का शाब्दिक अर्थ है नृत्य करने वालों का सम्राट यानि समस्त संसार के सभी नृत्यरत प्राणियों का नेतृत्वकर्ता। एक और अर्थ में इस चराचर जगत की जो भी सर्जना और विनाश है, उसके निर्देशक की भूमिका है नटराज की।

नटराज स्वरूप के उत्पत्ति संबंधी दो मान्यताएं

शिव के नटराज स्वरूप के उत्पत्ति संबंधी दो मान्यताएं चर्चित हैं। पहली धारणा दक्षिण भारत के चोल साम्राज्य में आठवीं से दसवीं शताब्दी के बीच इसके विकास को निरूपित करती है जबकि दूसरी धारणा के अनुसार इसका विकास पल्लव साम्राज्य के तहत सातवीं शताब्दी के आसपास हुआ।

चिदंबरम स्थित नटराज की भव्य मूर्ति

हालांकि इससे संबंधित पुख्ता प्रमाण के रूप में चिदंबरम स्थित नटराज की भव्य मूर्ति का उदाहरण दिया जा सकता है, जिसको योगसूत्र के प्रणेता पतंजलि ने बनवाया था। इस मूर्ति को पतंजलि ने योगेश्वर शिव के रूप में निरूपित करने की कोशिश की, जिसका अर्थ बेहद व्यापक है।

बौने राक्षस को अज्ञानता का प्रतीक माना गया

नटराज का आविर्भाव शिव के उस स्वरूप को महिमामयी बनाने के लिए हुआ, जिसका अर्थ बहुआयामी और बहुपक्षीय है। नटराज के स्वरूप में शामिल प्रतीक चिन्ह भी अपने आप में बेहद खास अर्थों को समाहित किए हुए हैं। जैसे तांडव स्वरूप में स्थित नटराज एक बौने राक्षस के ऊपर नृत्यरत हैं। यहां बौने राक्षस को अज्ञानता का प्रतीक माना गया तथा शिव का उसके ऊपर मग्न होकर एक लय से नृत्य करने को अज्ञानता के ऊपर विजय से जोड़ा गया है। शिव की ये मुद्रा आनंदम तांडवम के रूप में चर्चित है।

ब्रह्मा को पुनर्निर्माण का आमंत्रण देते हैं

इसी प्रकार नटराज के ऊपरी बाएं में अग्नि है, जो विनाश का प्रतीक है। यानि अप्रिय सर्जना को अग्नि के द्वारा नष्ट कर शिव भगवान ब्रह्मा को पुनर्निर्माण का आमंत्रण देते हैं।

मनुष्यता की गरिमामयी स्थिति का उद्घोषक

इसी प्रकार उनका दूसरा बायां हाथ उनके उठे हुए पैरों की ओर संकेत करता दिखता है, जिसका अर्थ स्वतंत्रता और उठान से है। यानि शिव अपने इस स्वरूप द्वारा सार्वभौमिक स्वतंत्रता का उद्घोष करते हैं, जो मनुष्यता के सर्वाधिक गरिमामयी स्थिति का उद्घोषक है।

बिना गति के जीवन नहीं

नटराज की लयबद्ध नृत्यरत स्थिति स्वयं में ब्रहाण्ड की लयबद्धता की उद्घोषणा करती है। अपनी इस स्थिति के द्वारा नटराज ये सिद्ध करते हैं बिना गति के कोई भी जीवन नहीं और जीवन के लिए लयबद्धता अनिवार्य है।

आनंदित होकर नृत्य करने की अवस्था

आनंदम तांडवम की अवस्था संपूर्ण यूनिवर्स के आनंदित होकर नृत्य करने की अवस्था है, जहां पर अज्ञानता व अहंकार का विनाश तथा पंचमहाभूतों सहित समस्त जैव-अजैव का एकीकरण होता है। यानि शिव के इस विशेष स्वरूप का अर्थ जितना व्यापक है, उतना ही ग्रहणीय भीहै।

भौतिक विज्ञानिक और दार्शनिक फ्रिट्जॉफ कॅप्रा ने भौतिकी विज्ञान का हवाला देते हुए बताया है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व भारतीय कलाकारों ने तांबे की श्रृंखला से भगवान शिव के नृत्?य में लीन स्वरूप को बनाया। आज हमारे समय में तमाम भौतिक वैज्ञानिक फिर से उन्नत तकनीकों को इस्तेमाल करते हुए 'कॉस्मिक डांस' का प्रारूप तैयार कर रहे हैं। कॉस्मिक डांस यानि तांडव करते हुए नटराज विनाश व रचना करते सतत नृत्य में रत हैं। यूरोपियन आॅर्गनाइजेशन फॉर न्यूक्लियर रिसर्च (सर्न) की प्रयोगशाला के बाहर नटराज का यही अद्भूत रूप स्थापित है।

दाएं हाथ का डमरू नए परमाणु की उत्पत्ति व बाएं हाथ की मशाल पुराने परमाणुओं के विनाश की कहानी बताता है। अभय मुद्रा में भगवान का दूसरा दांया हाथ हमारी सुरक्षा जबकि वरद मुद्रा में उठा दूसरा बांया हाथ हमारी जरुरतों की पूर्ति सुनिश्चित करता है।

शिव जी के नृत्य के दो रूप है एक है लास्य (नृत्य का कोमल रूप है) और दूसरा है तांडव जो की विनाश को दर्शाता है !

नटराज के पंजों के नीचे वाला राक्षस इस बात का प्रतीक है कि अज्ञानता उनके चरणों के नीचे है। उनके हाथ में उपस्थित अग्नि (नष्ट करने की शक्ति) इस बात की प्रतीक है कि वह बुराई को नष्ट करने वाले हैं।

उनका उठाया हुआ हाथ इस बात का प्रतीक है कि वे ही समस्त जीवों के उद्धारक हैं। उनके पीछे स्थित चक्र ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। उनके हाथ में सुशोभित डमरू जीवन की उत्पत्ति का प्रतीक है।

यह सब वे प्रमुख वस्तुएं है जिन्हें नटराज की मूर्ति और ब्रह्मांडीय नृत्य मुद्रा चित्रित करते हैं। अर्थात शिव जी का ताण्डव नृत्य ब्रह्माण्ड में हो रहे मूल कणों के नृत्य का प्रतीक है।

जीवन के रहस्य जो भगवान शिव ने पार्वती को बताए

भगवान शिव ने देवी पार्वती को 5 ऐसी बातें बताई थीं जो हर मनुष्य के लिए उपयोगी हैं, जिन्हें जानकर उनका पालन हर किसी को करना ही चाहिए-

1. क्या है सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ा पाप

देवी पार्वती के पूछने पर भगवान शिव ने उन्हें मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा धर्म और अधर्म मानी जाने वाली बात के बारे में बताया है। भगवान शंकर कहते है-

श्लोक- नास्ति सत्यात् परो नानृतात् पातकं परम्।।

अर्थात- मनुष्य के लिए सबसे बड़ा धर्म है सत्य बोलना या सत्य का साथ देना और सबसे बड़ा अधर्म है असत्य बोलना या उसका साथ देना।

इसलिए हर किसी को अपने मन, अपनी बातें और अपने कामों से हमेशा उन्हीं को शामिल करना चाहिए, जिनमें सच्चाई हो, क्योंकि इससे बड़ा कोई धर्म है ही नहीं। असत्य कहना या किसी भी तरह से झूठ का साथ देना मनुष्य की बबार्दी का कारण बन सकता है।

2. काम करने के साथ इस एक और बात का रखें ध्यान

श्लोक- आत्मसाक्षी भवेन्नित्यमात्मनुस्तु शुभाशुभे।

अर्थात- मनुष्य को अपने हर काम का साक्षी यानी गवाह खुद ही बनना चाहिए, चाहे फिर वह अच्छा काम करे या बुरा। उसे कभी भी ये नहीं सोचना चाहिए कि उसके कर्मों को कोई नहीं देख रहा है।

कई लोगों के मन में गलत काम करते समय यही भाव मन में होता है कि उन्हें कोई नहीं देख रहा और इसी वजह से वे बिना किसी भी डर के पाप कर्म करते जाते हैं, लेकिन सच्चाई कुछ और ही होती है। मनुष्य अपने सभी कर्मों का साक्षी खुद ही होता है। अगर मनुष्य हमेशा यह एक भाव मन में रखेगा तो वह कोई भी पाप कर्म करने से खुद ही खुद को रोक लेगा।

3. कभी न करें ये तीन काम करने की इच्छा

श्लोक-मनसा कर्मणा वाचा न च काङ्क्षेत पातकम्।

अर्थात- आगे भगवान शिव कहते है कि- किसी भी मनुष्य को मन, वाणी और कर्मों से पाप करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि मनुष्य जैसा काम करता है, उसे वैसा फल भोगना ही पड़ता है।

यानि मनुष्य को अपने मन में ऐसी कोई बात नहीं आने देना चाहिए, जो धर्म-ग्रंथों के अनुसार पाप मानी जाए। न अपने मुंह से कोई ऐसी बात निकालनी चाहिए और न ही ऐसा कोई काम करना चाहिए, जिससे दूसरों को कोई परेशानी या दुख पहुंचे। पाप कर्म करने से मनुष्य को न सिर्फ जीवित होते हुए इसके परिणाम भोगना पड़ते हैं बल्कि मारने के बाद नरक में भी यातनाएं झेलना पड़ती हैं।

4. सफल होने के लिए ध्यान रखें ये एक बात

संसार में हर मनुष्य को किसी न किसी मनुष्य, वस्तु या परिस्थित से आसक्ति यानि लगाव होता ही है। लगाव और मोह का ऐसा जाल होता है, जिससे छूट पाना बहुत ही मुश्किल होता है। इससे छुटकारा पाए बिना मनुष्य की सफलता मुमकिन नहीं होती, इसलिए भगवान शिव ने इससे बचने का एक उपाय बताया है।

श्लोक-दोषदर्शी भवेत्तत्र यत्र स्नेह: प्रवर्तते। अनिष्टेनान्वितं पश्चेद् यथा क्षिप्रं विरज्यते।।

अर्थात- भगवान शिव कहते हैं कि- मनुष्य को जिस भी व्यक्ति या परिस्थित से लगाव हो रहा हो, जो कि उसकी सफलता में रुकावट बन रही हो, मनुष्य को उसमें दोष ढूंढ़ना शुरू कर देना चाहिए। सोचना चाहिए कि यह कुछ पल का लगाव हमारी सफलता का बाधक बन रहा है। ऐसा करने से धीरे-धीरे मनुष्य लगाव और मोह के जाल से छूट जाएगा और अपने सभी कामों में सफलता पाने लगेगा।

5. यह एक बात समझ लेंगे तो नहीं करना पड़ेगा दुखों का सामना

श्लोक-नास्ति तृष्णासमं दु:खं नास्ति त्यागसमं सुखम्।

सर्वान् कामान् परित्यज्य ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

अर्थात- आगे भगवान शिव मनुष्यो को एक चेतावनी देते हुए कहते हैं कि- मनुष्य की तृष्णा यानि इच्छाओं से बड़ा कोई दु:ख नहीं होता और इन्हें छोड़ देने से बड़ा कोई सुख नहीं है। मनुष्य का अपने मन पर वश नहीं होता। हर किसी के मन में कई अनावश्यक इच्छाएं होती हैं और यही इच्छाएं मनुष्य के दु:खों का कारण बनती हैं। जरुरी है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझे और फिर अनावश्यक इच्छाओं का त्याग करके शांत मन से जीवन बिताएं।